

Sch. ---	---	---	---

(8. 5. 6)

Ex. वेदार्थान् प्राकृतस्त्वं वदसि न च ते जिह्वा निपातिता
मध्याह्ने वीक्ष्यसेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता ।
दीताग्नौ पाणिमंतः क्षिपसि स च ते दग्धो भवति नो
चारित्र्याच्चाहृदं चलयसि न ते देहं हरति भूः ॥
Mrich. ix.

शार्दूलविक्रीडितम्

सूर्याश्चैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्

Sch. ---	---	---	---

(12. 7)

Ex. आवासो विपिनायेत प्रियसखीमलापि जालायते
तापोऽपि स्वसितेन दावदहनज्वालाकलापायते ।
सापि त्वक्षिरहेण हंत हरिणीरूपायते हा कथं
कंदर्पोऽपि यमायते विरचयञ् शार्दूलविक्रीडितम्
Git. G. iv.

20 Syllables in a verse (कृतिः).

सुवदना

ज्ञेया सप्ताध्वज्जिह्वैरभनययुता स्तो मः मुक्कदा

Sch. ---	---	---	---

(7. 7. 6)

Ex. प्रत्याहर्त्यैत्रियाणि त्वक्षिरविषया-
आसाग्रनयना
स्वां ध्यायंतीं निक्षुञ्जे परस्परपुरुषं
हर्षेयपुलका ।
आनंदाभ्युत्पत्ताक्षी वसति सुवदना
योगैकरसिका
कामार्तिं त्यक्तुकामा ननु नरकरिपो
राधा मम सखी ॥

गीतिका

सज्जा भरो सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका

Sch. ---	---	---	---

Ex. करतालचंचलकंकणस्वनभि-

अग्नेय मनोरमा

रमणायवेणुनिमादरगिमसं-

गमेन मुखावहा ।

बहलानुरागनिवासराससमुद्ग-

वा तव रागिणं

विदधौ हारं खलु बभूवीजनचा-

रुचामरगीतिका ॥

21 Syllables in a verse (प्रकृतिः)

सम्भरा

मधैर्यनां त्रयेण त्रिमुनियतिपुता सम्भरा कीर्तितेयम्

Sch. ---	---	---	---

(7. 7. 7)

Ex. व्यालोलः केशपाशरतरलितमलकैः
स्वेदलोलौ कपोलौ
स्पष्टा दृष्टाधरश्रीः कुचकलशरुचा
हारिता हारयष्टिः ।
कांची कांचिप्रताशां स्तनजघनपद
पाणिनासाय सयः
पश्यंती द्वात्मरूपं तदपिविलुलित-
सम्भरेयं धिनोति ॥

Git. G. xii.

सरसी

(Also called धृतश्री and पंचकावलि).

नजभजजा जरो यदि तदा गदिता सरसी कवीधरैः

Sch. ---	---	---	---

(11. 10)

Ex. तुरगशताकुलस्य परितः
परमेकतुरगजम्भनः
प्रमाथितभूभूतः प्रतिपथं
मथितस्य भृशं महीभृता ।
परिचलतो बलानुजबल-
स्य पुरः सततं धृतश्रिय-
भिरगलिताभियो जलनिधे-

अ तदाऽभवद्दतरं महत् ॥ Sis. iii. 82.

22 Syllables in a verse (आकृतिः).

हंसी

मौ गौ नाभत्वारो गो गो वसुभवनयतिरिति भवति हंसी